

रॉबर्ट वैनॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 9

यशायाह 11:11-12:6; यशायाह 28

यशायाह 11:11-16

ठीक है, अध्याय 11 का शेष भाग, यानी श्लोक 11-16, एक अंश है जिसका मैंने पिछली तिमाही में उल्लेख किया था - मुझे नहीं पता कि आपको वह याद होगा या नहीं। यह एक ऐसा अंश है जिसकी व्याख्या करना आसान नहीं है। मैं यह निष्कर्ष निकालना चाहूंगा कि ये छंद उन घटनाओं का वर्णन करते हैं जो या तो सहस्राब्दी की शुरुआत से ठीक पहले या सहस्राब्दी के शुरुआती भाग में घटित होंगी। दूसरे शब्दों में, मैं इसे अध्याय के पहले भाग से निकटता से संबंधित पाता हूँ। हालाँकि, इसका विवरण कठिन है। आइए गद्यांश पढ़ें, फिर मैं कुछ टिप्पणियाँ करूँगा। "और उस दिन ऐसा होगा कि यहोवा अपनी प्रजा के बचे हुएों को अश्शूर, मिस्र, पत्रोस, कुश, और एलाम से छुड़ाने के लिये दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाएगा। , और शिनार से, और हमात से, और समुद्र के तट से। और वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा, और इस्राएल के सब निकाले हुएों को, और यहूदा के सब बिखरे हुएों को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा। एप्रैम की डाह दूर होगी, और यहूदा के द्रोही नाश किए जाएंगे; न तो एप्रैम यहूदा से डाह करेगा, और न यहूदा एप्रैम को चिढ़ाएगा। परन्तु वे पलिशतियोंके कन्धोंपर चढ़कर पश्चिम की ओर उड़ेंगे; वे पूर्व से उनको लूट लेंगे; वे एदोम और मोआब पर अपना हाथ बढ़ाएंगे; और अम्मोन के बच्चे उनकी आज्ञा मानेंगे। और यहोवा मिस्र के समुद्र की झील को सत्यानाश करेगा; और वह महानद पर अपना हाथ बढ़ा कर सात धाराओं में बहा देगा, और मनुष्यों को नंगे पांव पार कर देगा। और उसकी प्रजा के बचे हुएों के लिये, जो अश्शूर से छूटे रहेंगे, वैसा ही एक राजमार्ग होगा जैसा मिस्र देश से निकलने के समय इस्राएल के लिये हुआ था।

भविष्यवाणी प्रवचन की प्रकृति - संपूर्ण विश्व से लौटे हुए लोग

अब, मुझे लगता है कि मैंने भविष्यवाणी प्रवचन की प्रकृति की हमारी चर्चा के संबंध में पहले इस भविष्यवाणी का उल्लेख किया था, कि जहां तक इसके चरित्र का सवाल है, इतिहास पहले से नहीं लिखा गया था। आपके पास सभी विवरण नहीं हैं, और वहां एक निश्चित रहस्यमय तत्व है, और

जब आप इस तरह की भविष्यवाणी पढ़ते हैं, तो मुझे लगता है कि आप देखते हैं कि आप आश्चर्यचकित होते हैं कि सभी विवरण वास्तव में कैसे पूरे होंगे। यदि आप ओसवाल्ट के अंतर्गत पृष्ठ 14 और 15 को देखते हैं, तो यहां उनकी टिप्पणियाँ हैं, पृष्ठ 14 पर अंतिम पैराग्राफ के बगल में, जो शुरू होता है, "हालांकि इन छंदों का सामान्य अर्थ स्पष्ट है," जो पृष्ठ 296 से आता है, वह पैराग्राफ ओसवाल्ट में वे कहते हैं, "हालांकि इन छंदों का सामान्य अर्थ स्पष्ट है, लेकिन विशिष्टताएँ इतनी स्पष्ट नहीं हैं। क्या भविष्यवक्ता 539 ईसा पूर्व में बेबीलोन से वापसी की बात कर रहा है? आप देखिए, 11 में यह कहा गया है, 'ऐसा होना चाहिए कि प्रभु अपने बचे हुए लोगों को पुनः प्राप्त करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाएँ' - क्या यह 539 में बेबीलोन से वापसी है? यदि ऐसा है, तो मसीहा अभी तक प्रकट नहीं हुआ है और शायद ही वह पताका हो जिसके चारों ओर लोग रैली करते हैं; देखें 12 कहता है, 'वह राष्ट्रों के लिए एक झंडा खड़ा करेगा।' यदि आप श्लोक 10 पर वापस जाएं तो वह स्पष्ट रूप से मसीहा प्रतीत होता है। क्या यशायाह वास्तव में नये इसराइल, चर्च की बात कर रहा है? जैसा कि सुधारकों ने बनाए रखा, उदाहरण के लिए केल्विन? निश्चित रूप से पद 10 में 2:2-4 की याद दिलाते हुए विश्वासियों को दुनिया के हर हिस्से से मसीहा के लिए इकट्ठा किया गया था, जो बड़े पैमाने पर राष्ट्रों के संदर्भ में अनुभाग शुरू करता प्रतीत होता है। फिर भी, परिच्छेद का प्राथमिक ध्यान इसराइल के ऐतिहासिक राष्ट्र पर केंद्रित प्रतीत होता है, जिससे किसी को यह विश्वास हो जाता है कि यह मुद्दा यहूदी लोगों के कुछ महान अंतिम एकीकरण का है, जैसा कि रोमियों 11 में पॉल द्वारा संदर्भित किया गया है।

मैं इस पर उनसे सहमत होना चाहूँगा; यदि यह समकालीन ज़ायोनी आंदोलन में शुरू हुआ है, जैसा कि कई लोग मानते हैं, तो हम इसके अंतिम समापन की आशा कर सकते हैं, और भविष्य में यहूदी राष्ट्र द्वारा मसीह में ईश्वर की ओर रुख किया जा सकता है - जो निश्चित रूप से अभी तक नहीं हुआ है। श्लोक 11 में, जहां यह कहा गया है कि "वह अपने लोगों के बचे हुए लोगों को वापस लाएगा जिन्हें अश्शूर से, और मिस्र से, और पाथ्रोस से नेतृत्व किया जाएगा," और इसी तरह, ओसवाल्ट का कहना है कि यह विचार पूर्णता है; दूसरे शब्दों में, पृथ्वी के सभी हिस्सों से लोग लौटने वाले हैं - प्रभु उन्हें अपनी भूमि पर वापस लाएंगे - इसलिए यह पृष्ठ 14 पर अंतिम पैराग्राफ है। ओसवाल्ट का मानना है कि उद्देश्य अधिक आलंकारिक है, यह कहने का प्रयास कर रहा है कि

ईश्वर सक्षम है हर जगह से अपने लोगों को बहाल करने के लिए. वह इसे मुख्य विचार के रूप में लेता है। पृष्ठ 15 के शीर्ष पर, श्लोक 12 की बात करते हुए, यह श्लोक, काव्यात्मक रूप में, वही कहता प्रतीत होता है जो पूर्ववर्ती छंद गद्य में कहते हैं: लौटने वाले सारी पृथ्वी से आएं, यह पृष्ठ 288 पर है, और अगला पैराग्राफ श्लोक 13 पर है- 14, पृष्ठ 288 पर भी।

जॉर्ज एडम स्मिथ ने जबरन अधीनता की इस तस्वीर को महान "शांति के पैगंबर" के अयोग्य होने के रूप में बदनाम किया, आप देखते हैं कि 14-15 को "वे उड़ेंगे," वापसी के ये लोग, "फिलिस्तिनों के कंधों पर उड़ेंगे" पश्चिम की ओर; वे उन्हें पूर्व में बर्बाद कर देंगे, वे एदोम और मोआब पर अपना हाथ रखेंगे," इत्यादि... जॉर्ज एडम स्मिथ ने शांति के महान पैगंबर के अयोग्य होने के रूप में लागू अधीनता की इस तस्वीर को बदनाम किया; हालाँकि, किसी को 8 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के भविष्यवक्ता पर "परस्पर सहमति से युद्ध समाप्ति" के 19 वीं शताब्दी ईस्वी के विचारों को नहीं थोपना चाहिए - वास्तव में, राष्ट्रों के आपसी समझौते के परिणामस्वरूप शांति का विचार बाइबिल का नहीं है। . बाइबिल वाला, इसाईनिक वाला, एक शांति का है जो एक विशाल संप्रभु के प्रति आपसी समर्पण से उत्पन्न होता है। केवल तभी जब परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को हरा दिया है और उन्होंने उसके अधीन हो गए हैं, तभी शांति का दर्शन होता है जैसा कि हम 11:6-9 में पढ़ते हैं।

इब्रानियों को जो कठिनाई हुई, वह यह स्वीकार करने में थी कि वे भी ईश्वर के शत्रु थे, और उन्हें उसके अधीन होने की आवश्यकता थी, वे, हमारी तरह, स्वयं को ईश्वर के प्रिय के रूप में देखना चाहते थे, ताकि वे अपनी राजनीतिक पूर्ति के लिए ईश्वर का उपयोग कर सकें उद्देश्य. तो यह वह तस्वीर नहीं है जो यशायाह यहां पेश कर रहा है; बल्कि, वह एक बार फिर कह रहा है कि इस्राएल का पाप इस्राएल के प्रति परमेश्वर के वादों को नष्ट नहीं कर सकता। लाक्षणिक तरीके से, वह आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के आने वाले समय की ओर इशारा करता है, जैसा कि वे डेविड को जानते थे, लेकिन डेविड से भी महान व्यक्ति द्वारा सुरक्षित किया जाना था। तो ओसवाल्ड सुझाव दे रहा है कि आपके पास यहां ऐसी स्थितियाँ हैं जो तब घटित होंगी जब प्रभु अपने लोगों इज़राइल को सहस्राब्दी अवधि से पहले या उसके प्रारंभ में भूमि पर वापस लाएंगे।

ए-मिल यंग इसे सुसमाचार के प्रसार के आलंकारिक रूप में देखता है

अब इसकी तुलना

अपने उद्धरणों के ईजे यंग, पृष्ठ 19 और 20 से करें। ईजे यंग इस पूरे परिच्छेद को वर्तमान समय में सुसमाचार के प्रसार के एक आलंकारिक विवरण के रूप में लेते हैं। वहां दूसरा पैराग्राफ, पृष्ठ 19 के मध्य में, यंग के 396 से है, और वह श्लोक 12 के बारे में बात कर रहा है। वह कहता है, "मसीहा अन्यजातियों के लिए एक आकर्षण बिंदु होगा, और ईसाई उपदेश, ईसाई मिशनरियों के काम के माध्यम से, वह उन्हें अपनी ओर खींच लेगा। इसलिए, विशेष रूप से इस दिन और युग में, यह कितना महत्वपूर्ण है कि चर्च पृथ्वी के चारों कोनों में मिशनरियों को भेजे जो इस सच्चाई का प्रचार करें कि सच्चे मसीहा, यीशु के अलावा कोई मुक्ति नहीं है।

आप देखते हैं कि श्लोक 12 है, "वह राष्ट्रों के लिए एक झंडा खड़ा करेगा," वह मसीहा है, "और इस्राएल के निकाले हुए लोगों को इकट्ठा करेगा, और यहूदा के बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी के चारों कोनों से इकट्ठा करेगा।" यह सुसमाचार के प्रसार का आलंकारिक रूप है। श्लोक 13 में से, पृष्ठ 398 पर, अगला पैराग्राफ, 13 है, "एप्रैम की ईर्ष्या दूर हो जाएगी, और यहूदा के विरोधी काट दिए जाएंगे: एप्रैम यहूदा से ईर्ष्या नहीं करेगा, और यहूदा एप्रैम को परेशान नहीं करेगा।" दोनों राज्यों के बीच ऐतिहासिक काल से चला आ रहा तनाव दूर होने जा रहा है। यंग इस बारे में क्या कहता है? "मसीह में सभी राष्ट्रीय, अनुभागीय और क्षेत्रीय भेद समाप्त कर दिए जाएंगे, और इस कविता में प्रयुक्त चित्र के माध्यम से हम सीखते हैं कि मसीह में सच्ची एकता है, और किसी भी जाति या रंग के सभी लोगों के लिए एक जगह है, और केवल मसीह ही बना सकते हैं उन्हें एक" - वह पृष्ठ 398 है। पद 14 में, "वे पलिशितियों के कंधों पर चढ़कर पश्चिम की ओर उड़ेंगे; वे सब मिलकर पूर्व को लूट लेंगे; वे एदोम और मोआब पर अपना हाथ बढ़ाएंगे; और अम्मोन के बच्चे उनकी बात मानेंगे।" वह कहते हैं, "यहां आस्था की सच्ची एकता और दुनिया की शत्रुता का विरोध है। यह सच्ची एकता खुद को छिपाती नहीं है, खुद का उल्लंघन नहीं करती है, बल्कि हमले की उम्मीद करते हुए खुद का बचाव करती है। यह आक्रामक होता है; मसीहा के शत्रुओं को नष्ट किया जाना चाहिए, और उस एकता की शक्ति में जो मसीहा लोगों को देता है, पलिशितियों पर उड़ें, अर्थात् परमेश्वर और उसके चर्च के शत्रुओं के प्रतिनिधि" - यह पृष्ठ 398 है। फिर वह कहता है, "क्या यशायाह निःसंदेह, यहाँ जो वर्णन किया गया है, उसे शाब्दिक अर्थ में नहीं समझा जा सकता। बल्कि, यहां उस एकता की एक सुंदर तस्वीर है जो भगवान के संतों का अधिकार है जो उनके लिए

उनके अपने कार्यों के माध्यम से नहीं, बल्कि मसीह के खून और दुश्मन दुनिया पर विजय प्राप्त करने के काम में भागीदारी के जोरदार कार्य के माध्यम से प्राप्त की गई है - एक जिस पर विजय पाना मिशनरियों को भेजने और हर प्राणी के लिए ईश्वर की सलाह की जोरदार, वफादार उद्घोषणा के निरंतर कार्य के माध्यम से होता है" - पृष्ठ 20।

“ यहां भगवान के लोगों के लिए रखी गई गौरवशाली आशा, रेगिस्तान के खानाबदोश अरबों के शाब्दिक विनाश में शामिल नहीं है। बल्कि इसमें ईश्वर की बचाने वाली शक्ति को उन लोगों तक पहुँचाने का धन्य कार्य शामिल है, जो प्रेरित पॉल की तरह, कभी चर्च के उत्पीड़क थे। हमारी निरंतर प्रार्थना यह होनी चाहिए कि पूर्व के पुत्रों को नष्ट कर दिया जाए ताकि, झूठी संपत्ति और संपत्ति से वंचित होकर, वे इसके बजाय ईश्वर का मसीह प्राप्त कर सकें। यह तस्वीर परिस्थितियों के पूरी तरह से उलट होने की है, फ़िलिस्तीन में घटित नहीं होने वाली, भले ही यह कहती है, 'वह यहूदा के बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी के चारों कोनों से इकट्ठा करेगा, वह बचे हुए लोगों को वापस पाने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाएगा। उसके लोग इन जगहों से हैं।" उनका कहना है कि यह फिलिस्तीन में नहीं, बल्कि दुनिया के बड़े क्षेत्र में होगा - एक उलटफेर जिसमें ईश्वर के लोग सभी मनुष्यों को लाने और उन्हें मसीह के लिए बंदी बनाने के लिए आगे बढ़ेंगे। . यशायाह यहाँ नहीं बोल रहा है, यह श्लोक 16 है, मुख्य रूप से बेबीलोन के निर्वासन से वापसी का, हालाँकि ऐसा हो सकता है कि ऐसी वापसी का विचार इस भविष्यवाणी की नींव में हो।

ओसवाल्ड 1948 में इज़राइल की स्थापना को एक संभावित आंशिक पूर्ति के रूप में देखता है

अब, मुझे लगता है कि ओसवाल्ड कहेगा कि यहां जो होने वाला है उसका यह कुछ शुरुआती संकेत हो सकता है, लेकिन इसमें से बहुत कुछ अभी भी प्रदर्शित होना बाकी है। दूसरे शब्दों में, यानी, 1948 में जो हुआ और इज़राइल राष्ट्र का पुनर्जन्म जो हम यहां पाते हैं उससे जुड़ा हो सकता है, और जो कुछ हम यहां पाते हैं उसका एक संकेत निश्चित रूप से अभी तक और अधिक संपूर्ण तरीके से घटित होने वाला है। जो लोग लौट आए हैं वे मसीह की ओर नहीं मुड़े हैं। मुझे लगता है कि ओसवाल्ड ऐसा कहता है। वह कौन सा पेज है? ठीक है, वह कहते हैं, "प्राथमिक ध्यान इसराइल के ऐतिहासिक राष्ट्र पर लगता है ताकि यह यहूदी लोगों की उसी महान अंतिम सभा की

ओर इशारा कर सके जैसा कि रोमियों अध्याय 11 में पॉल द्वारा संदर्भित किया गया है।" फिर वह कहता है, "यदि यह ज़ायोनी आंदोलन में शुरू हुआ है," तो वह कहता है, "यदि यह ज़ायोनी आंदोलन में शुरू हुआ है, जैसा कि कई लोग मानते हैं, हम अंतिम समापन और मसीह में ईश्वर के पास लौटने की प्रत्याशा के साथ आगे बढ़ सकते हैं यहूदी राष्ट्र।" आपको इसका अधिक पूर्ण एहसास होगा, लेकिन इसलिए वह इस संभावना को खारिज नहीं करते हैं कि 1948 कम से कम कुछ संभावित प्रारंभिक चरण है। यंग के साथ आप एक साथ उन श्रेणियों से बाहर हो जाते हैं; आप सुसमाचार के प्रसार में आध्यात्मिक पूर्णता में हैं।

नहीं, ओसवाल्ड "आलंकारिक" शब्द का उपयोग नहीं करता है, वह ऐसा नहीं करेगा। खैर, वह इस अर्थ में आलंकारिक शब्द का उपयोग करता है: जब यह कहता है, उदाहरण के लिए, श्लोक 11 में, "कि प्रभु अपने लोगों के इस अवशेष को पुनः प्राप्त करेगा," और फिर यह नामों का उल्लेख करता है, "अश्शूर से, और मिस्र से, और पत्रोस से, और कुश से, और एलाम से, और शिनार से, और हमात से," वह जो कह रहा है वह यह है, "आपको यह निष्कर्ष निकालने की आवश्यकता नहीं है कि लोग केवल उन विशिष्ट स्थानों से लौटेंगे, और शाब्दिक अर्थ को वहां धकेलेंगे।" वह कह रहा है कि ये स्थान पृथ्वी के चारों कोनों को दर्शाते हैं; वे यह कहते हुए लाक्षणिक हैं, "भगवान अपने लोगों को हर जगह से वापस लाने जा रहा है," लेकिन यह वास्तव में वापस लाना है, और यह फिलिस्तीन में एक निश्चित भौगोलिक स्थान पर यहूदी लोगों का वापस आना है, इसलिए यह उस अर्थ में आलंकारिक नहीं है। जबकि आप देख रहे हैं कि यंग कह रहा है, यह बिल्कुल भी भौगोलिक नहीं है; यह सुसमाचार के प्रसार और फिर, जहां कहीं भी दुष्टता और बुराई है, उसके प्रति परमेश्वर के लोगों के विरोध के बारे में बोलने का एक लाक्षणिक तरीका है।

अविश्वास में वर्तमान इज़राइल पर वन्नॉय की चेतावनी

वहां दो पक्ष हैं, और मुझे लगता है कि आपको निष्कर्ष निकालने में बहुत सावधानी बरतनी होगी क्योंकि इज़राइल भूमि पर लौट आया है - आप जानते हैं, जैसा कि कुछ ने कहा - अब अन्यजातियों का समय समाप्त हो गया है। अन्य लोगों ने कहा कि छह दिवसीय युद्ध में और अन्य लोगों ने इसे अन्य घटनाओं के संबंध में कहा। लेकिन हम नहीं जानते कि इज़राइल राज्य का क्या

होने वाला है - फिलहाल इसकी संभावना नहीं दिखती है, लेकिन, आप जानते हैं, वहां वे अरब हैं जो इज़राइल को समुद्र में धकेल सकते हैं। आप सैद्धांतिक रूप से जानते हैं कि ऐसा हो सकता था। तो एक तरफ मुझे लगता है कि आपको उन चीजों को कहने में सावधान रहना होगा जो 1948 में या 1967 में, या जब भी हुई, विशेष रूप से कुछ विशिष्ट भविष्यवाणी की पूर्ति हैं। दूसरी ओर, अधिक सकारात्मक, मुझे लगता है कि आप यह कह सकते हैं कि यह एक उल्लेखनीय बात है कि 1948 में इस राष्ट्र का पुनर्गठन किया गया था। यहां ऐसे लोग हैं जो सदियों से तितर-बितर हो गए हैं, और उन्हें मिटाने, या उन्हें कुचलने और मिटा देने का प्रयास किया गया है, और इन सबके बावजूद वे अभी भी मौजूद हैं। वे वापस आते हैं और वे राज्य की स्थापना करते हैं, वे हिब्रू भाषा का पुनर्गठन करते हैं, अपनी संस्कृति का पुनर्निर्माण करते हैं, लोगों के रूप में अपनी पहचान बनाए रखते हैं।

अब, पुराने नियम काल पर वापस जाएँ; ऐतिहासिक रूप से, बेबीलोनियाई और असीरियन, मोआबी, पलिशती, अम्मोनी कहाँ हैं? वे चले गए - वे गायब हो गए। उनका कोई निशान नहीं बचा है, और फिर भी बाइबिल ने हमें बताया है कि इज़राइल को भूमि से तितर-बितर कर दिया जाएगा और भविष्य में किसी समय भगवान उन्हें भूमि पर वापस लाएंगे, और हम इतिहास के दौरान देखते हैं कि इन लोगों ने किस तरह से काम किया है अपनी पहचान बनाए रखी, और वास्तव में, इज़राइल राज्य का पुनर्गठन किया है। मुझे नहीं लगता कि आप इसके महत्व को कम कर सकते हैं। आप जानते हैं, धर्मग्रंथ की अधिकांश सहस्राब्दी व्याख्या उस समय के दौरान विकसित की गई थी जब ऐसा लग रहा था कि इज़राइल पूरी तरह से खत्म हो गया है और गायब हो गया है - उन्हें एक राज्य के रूप में पुनः स्थापित नहीं किया गया था।

अब, विचार करने के लिए अन्य मार्ग भी हैं। मुझे लगता है कि आपको इसके साथ अन्य श्लोक भी जोड़ने होंगे जो कहते हैं कि जब इस्राएल निर्वासन में होगा, तो वे यहोवा की दोहाई देंगे और यहोवा की ओर फिरेंगे और फिर वह उन्हें वापस ले आएगा, और हमने ऐसा नहीं देखा है। ऐसा लगता है जैसे ऐसे लोग हैं जो इज़राइल की भूमि पर वापस चले गए हैं, लेकिन उन्होंने प्रभु की ओर रुख नहीं किया है। देखिए, यदि आप जाएं--देखें कि क्या मैं इसे पा सकता हूँ--व्यवस्थाविवरण 32 यही है; नहीं, यह 30 है, “ ऐसा होगा, जब ये सब बातें अर्थात् आशीष और शाप, जो मैं ने तेरे साम्हने रख दिए हैं, तुझ पर आ पड़ेंगे, और तू उनको उन सब जातियोंके बीच स्मरण दिलाना जिनके विषय

यहोवा ने रखा है और तू अपने परमेश्वर यहोवा के पास फिरेगा, और जो जो आज्ञा मैं आज तुझ को सुनाता हूँ उसके अनुसार तू और तेरे लड़केबाले अपने सारे मन और सारे प्राण से उसका पालन करना; तब यहोवा तुझे बन्धुआई से लौटाएगा, और तुझ पर दया करेगा, और उन सब जातियोंमें से लौटकर तुझे इकट्ठा करेगा, जहां तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे तितर-बितर कर दे। पद 5, “और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मन का खतना करेगा,” पद 6 “और तेरे वंश के मन का भी खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखे, कि तू जीवित रह सकता है। और यहोवा ये सब श्राप तेरे शत्रुओं पर डालेगा।”

ठीक है, आप देख रहे हैं कि वहां न केवल भूमि पर लौटने, बल्कि प्रभु के पास लौटने का संदर्भ है, और हमने निश्चित रूप से इसका वह हिस्सा नहीं देखा है, कम से कम किसी बड़े पैमाने पर नहीं। और वास्तव में, मैंने यहूदी धर्म प्रचार के बारे में जो सुना है, वहां यहूदी लोगों के बीच प्रवासी यहूदियों की तुलना में सुसमाचार के प्रति अधिक प्रतिक्रिया है, इसलिए, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि हमें अभी और इंतजार करना होगा। हो सकता है कि पश्चिमी दुनिया में यहूदी लोगों के बीच एक महान पुनरुत्थान और प्रभु की ओर रुख हो, लेकिन तब हम इज़राइल में एक बड़ी वापसी की आशा करेंगे। मुझे नहीं पता कि ये सभी चीजें कैसे काम करेंगी, मुझे नहीं लगता कि अभी तक सब कुछ ठीक हो गया है - यह मेरी अपनी धारणा है।

प्रश्न: क्या चर्च के साथ काम करने के बाद भगवान यहूदी लोगों के साथ काम करने के लिए वापस जा रहे हैं?

अच्छा, हाँ, इसमें कुछ बात है, और इसमें कुछ सच्चाई भी है। मुझे ऐसा लगता है कि अगर हम रोमियों 11 में जाएँ, तो वहाँ यह क्रम है जहाँ परमेश्वर ने पुराने नियम के काल में यहूदी लोगों के साथ काम किया था, और फिर जब उन्होंने मसीहा को अस्वीकार कर दिया, तो वह अन्यजातियों की ओर मुड़ गया; परन्तु तब यहूदी ईर्ष्या से भड़क उठेंगे और उसी के पास लौट आएंगे जिसे उन्होंने अस्वीकार किया था, और ऐसा प्रतीत होता है कि इसी क्रम में सारा इस्राएल बच जाएगा। जैसा कि पॉल यहां कहते हैं, यह यहूदी लोगों में बड़े पैमाने पर बदलाव जैसा लगता है, जो मुझे नहीं लगता कि हमने अभी तक देखा है।

यशायाह 12 - स्तुति का गीत

ठीक है, अध्याय 12 प्रशंसा का एक गीत है, और इन सभी चीजों को ध्यान में रखते हुए, ये महान चीजें जो होने वाली हैं - यह एक महान अध्याय है; एक संक्षिप्त: "और उस दिन तू कहेगा, हे यहोवा, मैं तेरी स्तुति करूंगा; यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित था, तौभी तेरा क्रोध दूर हो गया, और तू ने मुझे शान्ति दी है। देख, परमेश्वर मेरा उद्धार है; मैं भरोसा रखूंगा, और न डरूंगा; क्योंकि यहोवा ही मेरा बल और मेरा गीत है; वह मेरा उद्धार भी बन गया है। इस कारण तुम आनन्द के साथ उद्धार के कुओं से जल निकालोगे। और उस दिन तुम कहोगे, यहोवा की स्तुति करो, उस से प्रार्थना करो, लोगों में उसके कामों का वर्णन करो, उसका नाम महान है। यहोवा के लिये गाओ; क्योंकि उस ने बड़े बड़े काम किए हैं; यह बात सारी पृथ्वी पर प्रगट हो गई है। हे सिय्योन के रहनेवालों, ऊंचे स्वर से चिल्लाओ; क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुम्हारे बीच में महान है।

देखिए, इस खंड के अंत में इन अद्भुत चीजों के बारे में बताया गया है जिन्हें प्रभु पूरा करेंगे। अध्याय 12 में प्रशंसा का वह संक्षिप्त गीत है, जो एक बहुत ही सुंदर अंश है। ठीक है, यह इम्मानुएल की पुस्तक, अध्याय 7-12 का अंत है।

यशायाह 13-23 विदेशी राष्ट्रों पर निर्णय अब पुस्तक की संरचना पर वापस जाएँ: अध्याय 1-6 को याद रखें जो निर्णय-आशीर्वाद, निर्णय-आशीर्वाद, निर्णय-आशीर्वाद का खंड है, तीन खंड; 7-12 इम्मानुएल की पुस्तक, विशिष्ट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ जो प्रारंभिक भागों में स्पष्ट है कि यह सिरो-एफ्रैमिक युद्ध है; अगला भाग, 13-23, मैं उससे निपटने नहीं जा रहा हूँ, लेकिन अगर आपको याद हो जब हमने उस संरचना पर चर्चा की थी, 13-23 विदेशी राष्ट्रों के खिलाफ न्याय की भविष्यवाणियाँ हैं। आप देखते हैं कि 13 ठीक इसके साथ शुरू होता है : "बाबुल का बोझ, जिसे आमोस के पुत्र यशायाह ने देखा था," और आपके पास बाबुल पर आने वाले न्याय की भविष्यवाणी है, और वह सीधे अध्याय 23 तक जाती है - आपके पास बाबुल है, अध्याय 15 में आपके पास मोआब है, 17 में दमिश्क का बोझ, 18 में इथियोपिया, 19 में मिस्र, इत्यादि... विदेशी राष्ट्रों के विरुद्ध न्याय की भविष्यवाणियाँ।

24-27, वह एक छोटा खंड है जिसे "यशायाह का छोटा सर्वनाश" कहा जाता है, एक बहुत ही दिलचस्प खंड जो अधर्मी लोगों पर आने वाले फैसले को दर्शाता है जो कि दायरे में वैश्विक लगता है, और फिर भगवान के राज्य की स्थापना और उन लोगों के लिए आशीर्वाद जो उसके हैं। मैं यशायाह 24-27, उस खंड से भी निपटने नहीं जा रहा हूँ।

यशायाह 28 इममानुएल की पुस्तक के समानांतर (ईसा. 7-12) मैं 28-35 की ओर जाना चाहता हूँ, जो, यदि आपको याद हो, तो मैंने उल्लेख किया है कि यह कई मायनों में इममानुएल की पुस्तक के समान प्रतीत होता है, जिस खंड में हम अभी चर्चा कर रहे हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उतनी स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह आम तौर पर 7-12 जैसी ही समय सीमा लगती है। तो आइए अध्याय 28 की ओर मुड़ें। जैसा कि मैंने बताया, इममानुएल की पुस्तक में समानताएं हैं, इममानुएल की पुस्तक में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट रूप से अध्याय 7 में प्रस्तुत की गई है; जब आप अध्याय 28 पर पहुँचते हैं, तो भविष्यवाणी के ऐतिहासिक संदर्भ का कोई स्पष्ट विवरण नहीं होता है। हमें यह नहीं बताया गया है कि संदेश कहाँ कहा गया था, लेकिन ऐसा लगता है कि यह संदेश देश के कुलीनों या नेताओं को संबोधित था। दूसरी ओर यशायाह 7, राजा को संबोधित था। यहां हम विशेष रूप से राजा के बजाय कुलीनों, देश के नेताओं के बारे में बात कर रहे हैं, और जब आप अध्याय को पढ़ते हैं, तो कुछ बयानों के साथ संदर्भ से पता चलता है कि संदेश एक समय दिया गया होगा शायद, रईसों का भोज, और हम अध्याय में जाएंगे और देखेंगे कि ऐसा क्यों कहा गया है। शायद उन्होंने असीरिया से मदद मांगने के अपने फैसले का जश्न मनाया। याद रखें कि सिर्रो-एप्रैम की धमकी में उन्होंने असीरिया की ओर रुख किया और असीरिया के साथ गठबंधन किया जो संभवतः इस अध्याय की पृष्ठभूमि प्रतीत होता है। अब, जब आप अध्याय के आरंभिक भाग में आते हैं, तो मुझे लगता है कि आप उस तरीके को देखते हैं जिसमें यशायाह सुनने के लिए अपना संदेश प्रस्तुत करता है। वह असीरिया के साथ उस गठबंधन की निंदा से शुरुआत नहीं करते। वह अमोस की तरह, एप्रैम के उत्तरी साम्राज्य के नेताओं पर हमला करने से शुरू होता है, आपको याद होगा। जब अमोस अपनी भविष्यवाणी को उत्तरी साम्राज्य पर केंद्रित करना चाहता था, तो उसने विदेशी देशों से शुरुआत की; वह चचेरे भाई राष्ट्रों के पास आया, और फिर वह यहूदा आया, और फिर अंततः - सुनवाई प्राप्त करने के बाद - वह

उत्तरी साम्राज्य की निंदा के साथ अपने संदेश के केंद्र में आता है।

यशायाह 28:1ff एप्रैम के पियक्कड़ों की निंदा खैर, यशायाह यहां यहूदा से शुरू नहीं होता है, लेकिन यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके संदेश का केंद्र बिंदु यही है। पहली कविता पर ध्यान दें: वह कहता है, “हाय घमंड के मुकुट पर, एप्रैम के शराबियों पर, जिनकी शानदार सुंदरता एक मुरझाने वाले फूल की तरह है, जो शराब के नशे में धुत्त लोगों की मोटी घाटियों के सिर पर हैं! देख, यहोवा के पास एक पराक्रमी और बलवन्त है, जो ओलों की आंधी और विनाशक तूफ़ान के समान, और उमड़ते हुए प्रचण्ड जल के सैलाब के समान अपने हाथ के बल से भूमि पर गिरा देगा। एप्रैम के मतवालोंके घमण्ड का मुकुट, पांवों तले रौंदा जाएगा; और तेजोमय सुन्दरता, जो मोटी तराई के सिरे पर है, मुझनिवाला फूल, और ग्रीष्मकाल से पहिले पहिले फल के समान होगी; जिसे देखने वाला देखता है, और वह उसके हाथ में रहते हुए ही उसे खा जाता है।”

वह एप्रैम के शराबियों की निंदा से शुरुआत करता है, और आलंकारिक भाषा का उपयोग करते हुए, वह उत्तरी साम्राज्य की राजधानी सामरिया के विनाश की बात करता है। वह सामरिया को "गौरव का यह मुकुट जिसकी शानदार सुंदरता मोटी घाटियों के सिर पर एक मुरझाता हुआ फूल है" के रूप में संदर्भित करता है। वह राजधानी, सामरिया, उत्तरी साम्राज्य के लोगों का मुकुट और गौरव, एक मुरझाते फूल की तरह बनने जा रही है - यही वह कह रहा है। तो जाहिर है, सामरिया का अभी तक पतन नहीं हुआ था - हम 721 ईसा पूर्व से पहले के हैं। यहूदा के कुलीन, जिनसे यशायाह बात कर रहा था, निस्संदेह उस तरह की भविष्यवाणी पर खुशी मनाएंगे, यह सुनकर कि सामरिया नष्ट होने वाला है। और जब तक यशायाह उत्तरी साम्राज्य पर हमला करता है, वे उसकी बात सुनने के लिए तैयार हैं। इसलिए वह पद 2 में कहता है, "प्रभु के पास एक शक्तिशाली और शक्तिशाली व्यक्ति है, जो ओलों की आंधी और विनाशक तूफ़ान की तरह, और उमड़ते हुए प्रचण्ड जल की बाढ़ की तरह, [उत्तरी साम्राज्य] को नीचे गिरा देगा। अभिमान का मुकुट, एप्रैम के शराबी, पैरों के नीचे रौंदा जाएगा: और शानदार सुंदरता, जो वसा घाटी के सिर पर है" देखो जो सामरिया के खिलाफ है, "एक मुरझाने वाला फूल होगा, और पहले के शुरुआती फल की तरह होगा ग्रीष्म ऋतु में, जो कोई उस पर दृष्टि करता है वह उसे देखता है, और वह उसके हाथ में

रहते हुए भी उसे खा जाता है।” तो वह सामरिया के आने वाले विनाश के उस आलंकारिक वर्णन से शुरू करता है।

यशायाह 28:5-6 प्रभु अपने लोगों के बचे हुए लोगों के लिए महिमा के रूप में और फिर छंद 5 और 6: भविष्य के कुछ समय के लिए एक विरोधाभास खींचा गया है जब प्रभु महिमा का मुकुट होगा, सामरिया शहर नहीं, बल्कि प्रभु होगा उसके बचे हुए लोगों के लिए महिमा का मुकुट बनो। देखिए पद 5 में वह कहता है, "उस समय सेनाओं का यहोवा अपनी प्रजा के बचे हुए लोगों के लिये महिमा का मुकुट, और शोभायमान मुकुट, और न्याय करने वालों के लिये न्याय की आत्मा ठहरेगा।" और उन लोगों की शक्ति के लिए जो लड़ाई को फाटक की ओर मोड़ देते हैं।" एक शहर नहीं, बल्कि स्वयं प्रभु, जो अपने लोगों को जीत और न्याय देगा, भविष्य में किसी समय महिमा का विकास करेगा। इसलिए सामरिया नष्ट होने वाला है, और तब ध्यान भविष्य के किसी समय की ओर आकर्षित होता है जब एक शहर नहीं, बल्कि प्रभु अपने बचे हुए लोगों के लिए महिमा का मुकुट होगा।

यशायाह 28:7-8 यहूदा पियक्कड़ एप्रैम जितना बुरा जब आप श्लोक 7 और 8 पर पहुंचते हैं, तो श्लोक 7 के साथ विचार का तीव्र परिवर्तन होता है। किंग जेम्स का वहां एक खराब अनुवाद है; यह कहता है, "परन्तु उन्होंने दाखमधु और मदिरा के कारण भी पाप किया है।" "लेकिन वे भी," वहां हिब्रू में *वेगम एलेह है*, "और ये भी," और इसे इसी तरह पढ़ा जाना चाहिए, "और ये भी।" जैसा कि एनआईवी कहता है, "शराब से डगमगाता है और बीयर से रील।" नई अंग्रेजी बाइबिल में है: "ये भी शराब के आदी हैं।" हिब्रू स्पष्ट है, यह "ये" है। निहितार्थ यह है कि यशायाह उत्तर के बारे में बात कर रहा है, लेकिन वह दक्षिण के रईसों से बात कर रहा है, और यहाँ वह उनकी ओर मुड़ता है। उन्होंने श्लोक 1 में कहा, "अभिमान के मुकुट पर हाथ, एप्रैम के पियक्कड़ों पर," लेकिन अब वह कहते हैं, "परन्तु ये भी शराब से लड़खड़ाते हैं और बीयर से लड़खड़ाते हैं" - दूसरे शब्दों में, जो लोग ठीक सामने बैठे हैं उसके। वह अपने सामने भोज कर रहे इन सरदारों की ओर इशारा करके कहता है, "तुम एप्रैम के पियक्कड़ों के समान बुरे हो" – "परन्तु ये भी दाखमधु और मदिरा के

कारण भटक गए हैं, और मार्ग से भटक गए हैं; याजक और भविष्यद्वक्ता ने मदिरा पीकर पाप किया है; वे दाखमधु से डूब गए हैं; वे मदिरा के कारण मार्ग से हट गए ; वे दृष्टि में भूल करते हैं, वे निर्णय में चूक जाते हैं। क्योंकि सब मेजें उल्टी और गंदगी से भरी हैं, यहां तक कि कोई भी जगह साफ नहीं है।" कड़ी भाषा, विशेषकर यदि वह इन नेताओं के साथ किसी प्रकार के भोज में हो : "तुम्हारी मेजें उल्टी से भरी हैं, तुम यहूदा के शराबी हो।"

यशायाह 28:9-10 रईसों ने उत्तर दिया: तुम क्या सोचते हो कि तुम कौन हो? अब, आप कल्पना कर सकते हैं कि इस प्रकार की भाषा सुनने वालों में आक्रोश और प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकती है। और छंद 9-10 आपको प्रतिक्रिया देता है, और मुझे लगता है कि 9-10 में आपके पास वही है जो इन महानुभावों ने कहा था या कम से कम वे क्या सोच रहे थे, "वह किसे ज्ञान सिखाएगा?" वह किसे सिद्धांत समझाएगा? जो दूध से छुड़ाए गए, और स्तनों से खींचे गए हैं? क्योंकि उपदेश पर उपदेश होना चाहिए, उपदेश पर उपदेश होना चाहिए; लाइन पर लाइन, लाइन पर लाइन; थोड़ा इधर, और थोड़ा उधर।" मुझे लगता है कि यह विचार बिल्कुल स्पष्ट है कि ये रईस कहते हैं, "आप अपने बारे में क्या सोचते हैं कि आप कौन हैं? आप कौन हैं जो सोचते हैं कि आप हमें कुछ सिखा सकते हैं? वह किसे ज्ञान सिखाएगा? वह किसे उपदेश समझाएगा?" और फिर निहितार्थ यह है कि वह उनके साथ छोटे बच्चों की तरह व्यवहार कर रहा है, उन्हें अपनी नैतिक शिक्षा दे रहा है "पंक्ति पर पंक्ति, उपदेश पर उपदेश, उपदेश पर उपदेश," और वास्तव में व्यंग्य को समझने के लिए आपको इसे हिब्रू में पढ़ना होगा यहाँ क्या कहा जा रहा है. हिब्रू में श्लोक 10 इस प्रकार है: *कि सव लेसव, सव लेसव, कव लेकव, कव लेकव*, आदि।

सुनिए जेरूसलम बाइबिल इसका अनुवाद किस प्रकार करती है, जो कि कुछ हद तक एक व्याख्या है, लेकिन मुझे लगता है कि यहां जो कुछ भी हो रहा है उसका सार यह विशेष रूप से हिब्रू से मिलता है। जेरूसलम बाइबिल कहती है, "वह किसे सोचता है कि वह व्याख्यान दे रहा है? वह क्या सोचता है कि उसका संदेश किसके लिए है? शिशुओं का अभी-अभी दूध छूटा है? शिशुओं को अभी-अभी स्तन से निकाला गया है? उसके साथ," और फिर जेरूसलम बाइबिल इसका अनुवाद भी नहीं करती है, यह एक बच्चे की अस्पष्टता की तरह है, "कि सव लेसव, सव लेसव, काव लेकव,

काव लेकवा।" ऐसा लगता है मानो वे व्यंग्यपूर्वक कह रहे हों, "तुम्हें क्या लगता है कि तुम अपनी बचकानी बातों से हमारे साथ शिशुओं जैसा व्यवहार कर रहे हो?" जेरूसलम बाइबिल में एक नोट है जो यह कहता है, "यशायाह के उपदेश की नकल करना, जिसे वे समझ से बाहर मानते हैं, उनके ध्वनि मूल्य के लिए चुने गए शब्दों के साथ, और एक बच्चे के बड़बड़ाने को याद करते हुए। यदि शब्दों का अनुवाद करना हो तो वे पढ़ेंगे, 'ऑर्डर पर ऑर्डर, ऑर्डर पर ऑर्डर ; नियम पर नियम; नियम एक नियम; यहाँ थोड़ा सा; थोड़ा वहाँ।" द न्यू बाइबल कमेंट्री कहती है, "पद्य 10 का हिब्रू एक जिंगल है, जो लगभग हमारे उपहासपूर्ण 'ब्ला, ब्ला, ब्ला' के बराबर है, [लोग बात कर रहे हैं], लेकिन इतना अर्थहीन नहीं है।" आप देखिए, इसका अर्थ है "नियम पर नियम, नियम पर नियम, पंक्ति पर पंक्ति।"

जेबी फिलिप्स कहते हैं, "क्या हम अभी दूध छुड़ा रहे हैं? क्या हमें यह सीखना होगा कि कानून कानून है, कानून कानून है? नियम ही नियम है, नियम ही नियम है?" हां, "प्रभु इन लोगों से लड़खड़ाते होठों और विदेशी जीभ से बात करेंगे," - अर्थात्, परमेश्वर के अर्थ को बकवास बनाओ, और तुम अशशूर से उसका पेट भरोगे।

यशायाह 28:11 भगवान उन्हें विदेशी होठों से संबोधित करेंगे अब आप देखते हैं कि पद 11 में क्या होता है: आप भगवान के अर्थ को बकवास करते हैं और आप इसका मजाक उड़ाते हैं और यशायाह के उपदेश के बारे में व्यंग्यात्मक ढंग से बोलते हैं, पद 11 में प्रभु क्या कहते हैं: "क्योंकि लड़खड़ाते होठों से," यह किंग जेम्स का एक बुरा अनुवाद है, "लेकिन वह अजीब होठों और दूसरी जीभ से इन लोगों से बात करेगा।" एनआईवी इसका अच्छे से अनुवाद करता है। एनआईवी कहता है, "तो फिर बहुत अच्छा," आप इस संदेश का मजाक उड़ाएंगे, "बहुत अच्छा तो फिर भगवान विदेशी होठों और अजीब भाषाओं के साथ इन लोगों से बात करेंगे।" दूसरे शब्दों में, भगवान उनसे स्पष्ट रूप से बात कर रहे हैं, नियम पर नियम, पंक्ति पर पंक्ति। वे उसका मजाक उड़ाते हैं; वे सुनने से इनकार करते हैं; वे उसका उपहास करते हैं; और वे स्पष्ट शिक्षा को बड़बोलेपन के समान बनाते हैं। इसलिए, क्या होने वाला है? श्लोक 11, ईश्वर उन्हें अशशूर सेना के हमले के रूप में बड़बड़ाने जैसा कुछ देगा, जिसकी बोली उनके लिए समझ से बाहर होगी, इसलिए "विदेशी होठों

और अजीब भाषाओं के साथ भगवान इन लोगों से बात करेंगे।"

यशायाह 28:12-13 परमेश्वर ने यहूदा को पद 12 और 13 में डांटते हुए कहा, " जिस से उस ने कहा, यही विश्राम है, जिस से तुम थके हुआओं को विश्राम दिलाओ; और यह ताज़गी की बात है: तौभी उन्होंने न सुना। लेकिन प्रभु का वचन" - राजा जेम्स कहते हैं, "था", लेकिन यह होना चाहिए "होगा", यह परिपूर्ण के साथ एक क्रमबद्ध है--"लेकिन प्रभु का वचन उनके लिए होगा," और फिर आपको उस *सेव लेसव, सेव लेसव* की पुनरावृत्ति मिलती है। "प्रभु का वचन उनके लिये उपदेश पर उपदेश, उपदेश पर उपदेश होता जाएगा; लाइन पर लाइन, लाइन पर लाइन; थोड़ा इधर, थोड़ा उधर; कि वे जाकर पीछे गिर पड़ें, और टूट जाएं, और फंदे में फंस जाएं, और पकड़े जाएं।" फटकार जारी है, भगवान ने उन्हें अश्रू के बजाय उस पर भरोसा करते हुए, उसके पीछे चलने में आराम और ताज़गी हासिल करने का अवसर दिया है, लेकिन वे सुनना नहीं चाहते थे। तो यशायाह क्या कहता है, या भगवान यशायाह के माध्यम से कहते हैं, "वे उसे असीरियन आक्रमणकारियों के माध्यम से एक अलग तरीके से बोलते हुए सुनेंगे जो ऐसी भाषा बोलने जा रहे हैं जिसे वे समझने वाले नहीं हैं," और फिर प्रभु ने उनके उपहास का प्रतिनिधित्व करने के लिए अनुकरण किया विजेता की अवर्णनीय भाषा. प्रभु का वचन उनके लिए *सेव लेसव, कव लेकव*, आदि होगा।

तो मैं देख रहा हूँ कि हमारा समय समाप्त हो गया है; हमें अगली बार यहीं से लेना होगा।

नाओमी टोव्स द्वारा लिखित, 2009 गॉर्डन कॉलेज
 कार्ली गीमन द्वारा संपादित
 टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स
 द्वारा पुनः सुनाया गया